भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
IIT INDIAN INSTITUTE OF TECHNOLOGY
BANARAS HINDU UNIVERSITY

☎ 0542 2366676: e-mail : pro.ppc@itbhu.ac.in

कुलसचिव कार्यालय
(प्रेस एवं प्रचार प्रकोष्ठ)

राष्ट्रीय सहारा

Office of the Registrar
(Press & Publicity Cell)

दिनांक : 19.06.2019

आईआईटी की सिरामिक तकनीक से लाभांवित होंगे भारतीय उपभोक्ता

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

वाराणसी।

आईआईटी (वीएचयू) और एएनटीएस सिरामिक प्राइवेट लिमिटेड, मुंवई के मध्य तकनीकी हस्तांतरण पर मंगलवार को निदेशक कार्यालय के समिति कक्ष में एमओयू पर हस्ताक्षर किया गया। इस समझौते से अव घरेलू उपयोग और इलेक्ट्रॉनिक सर्किट/उपकरणों के लिए धातु-सिरामिक जोड़ में वहुत महत्वपूर्ण भूमिका होगी। यह करार तकनीक हस्तांतरण और पेटेंट के लिए किया गया है। आईआईटी को इस समझौते से भारतीय उपभोक्ताओं तक सिरामिक के क्षेत्र में अपने सस्ते और मजवूत तकनीक को भारतीय वाजार में उतारने का सुन्हरा मौका मिला है। जिस एंट कंपनी के साथ समझौता हुआ है वह सिरामिक के क्षेत्र में देश की अग्रणी कंपनी है।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक प्रो. प्रमोद कुमार जैन ने कहा कि इस

आईआईटी और एएनटीएस के बीच हुआ करार

प्रकार के ज्वाइंट अनुप्रयोगों के लिए सपाट सतह फिनिश और उच्च जोड़ मजवूती की आवश्यकता है। मौजूदा जोड़ने वाले पदार्थ महंगे हैं और उच्च तापमान पर परिष्कृत होते है। वर्तमान में विकसित किये जा रहे ये जोड़ने वाले पदार्थ पर्यावरण के अनुकूल, आसानी से संसाधित, यांत्रिक रूप से मजवूत, थर्मल रूप से स्थिर और कम लागत वाले है। यह समझौता प्रो. प्रमोद कुमार जैन, निदेशक, आईआईटी (वीएचयू), प्रो राजीव प्रकाश, अधिष्ठाता (आरएंडडी), प्रो. प्रलय मैती व डा. शांतनु दास तथा डा. सव्यसाची रॉय, निदेशक सिरामिक की उपस्थिति में आईआईटी(वीएचयू) में सम्पन्न हुआ। प्रो. जैन ने कहा कि वनस्पति तेल आधारित क्रॉसलिंक्ड पॉलीमर का उपयोग उच्च गति वॉलमिलिंग जैसे अनुप्रयोग में किया जाता है। हालांकि, विकसित चिपकने वाला पदार्थ धातु और सिरेमिक भागों के वीच एक वेहतर संवंध प्रदान करता है। जिसका उपयोग उच्च गति वॉलमिलिंग के लिए किया जा सकता है।

आईआईटी के सिरामिक इंजिनियरिंग ने विकसित की है तकनीक : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक प्रो. प्रमोद कुमार जैन ने वताया कि यह तकनीक आईआईटी (वीएचयू) के पदार्थ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी स्कूल के प्रोफेसर प्रलय मैती और उनकी टीम तथा सिरामिक विभाग द्वारा विकसित किया गया है। इस पेटेंट तकनीकी का अधिग्रहण मेसर्स सिरामिक प्राइवेट लिमिटेड, मुंवई जोकि भारत का प्रमुख सिरामिक उत्पादों का निर्माता है द्वारा किया गया है जोकि इसके वाणिज्यिक उत्पादन के लिए भी सहमत हुआ है।